करामाती पत्थर

डॉ. इन्द्र वारिज

बत पुराने समय की है। आने-जाने के साधन बहुत कम थे। लम्बी यात्राऐंक रने में लोगों को कठिनाई होती थी। चोर-उचक्कों और बदमाशों का भी डर रहता था। इक्के दुक्के यात्रा करना जोखिम का काम था।

एक आदमी को एक लम्बे सफर पर जाना पड़ा। रास्ते में जहाँ रात होती वहीं वह किसी गाँव में ठहर जाता और पौ फटते ही अपनी मंजिल पर चल पड़ता। दो दिन तो उसने घर से लाई रोटियों से काम चलाया, पर तीसरे दिन वह भूखा ही शाम तक चलता रहा। अंधेरा होने से पहले ही वह एक गाँव में पहुँच गया। गाँव में ठहरने के तो बहुत से ठिकाने थे पर मुश्किल थी भोजन की।

गाँव के लोग गरीब होते है। उन्हें स्वयं भरपेट रोटी नहीं मिलती, फिर वे उसे कैसे रोटी देंगे। न ही उसकी अण्टी में इतना दम था कि वह भोजन की व्यवस्था कर सकेगा। यही सोचता-सोचता वह चला जाता जा रहा था। उसे भोजन पाने की कोई तरकीब निकालनी थी। और वह तरकीब उसने सोच ही ली।

रास्ते में सड़क के किनारे पड़े हुए पत्थरों में से उसने एक पत्थर उठाया और अपने कपड़ों के थैले में रख लिया। वह पत्थर साफ-सुथरा ओर चमकदार था। गाँव में पहुँचक रवह एक घर में चला गया। उस घर की मालकिन ने उसका स्वागत किया। घर की मालकिन एक बुढ़िया थी। बुढ़िया ने उससे पूछा- "तू कौन है, कहाँ रहता है और इधर कहाँ जा रहा है?" उस मुसाफिर ने कहा-'माँ! मैं एक दूर गाँव से आया हूँ। मुझे अभी आगे जाना है। चलते-चलते रात हो गई। इसलिए रात बिताने के लिए आपके घर आया हूँ।"

बुढ़िया ने रात बिताने के लिए उसे एक चारपाई दे दी।

वह आदमी काफी थका हुआ था। लेकिन उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। उसने बुढ़िया को आवाज दी और कहा - माँ, मैं दिन भर का भूख हूँ। क्या आप मुझे कुछ खाने के लिए दे सकेंगी।

बुढ़िया बड़ी कंजूस थी। उसने कहा- "बेटा! हम तो बहुत गरीब हैं। बच्चों का भी पेट नहीं भर पाते। खाने के लिए तो घर में इस समय कुछ भी नही है।" वह आदमी बड़ा चालाक था। वह बुढ़िया की चालाकी भाँप गया जो गरीब होने का बहाना बना रही थी। इसलिए उसने कहा- "माँ, आप चिन्ता न करें। बस चूल्हा सुलगा दें और एक पतीली में थोड़ा-सा पानी मुझे दे दें। मेरे पास जादू का एक ऐसा पत्थर है कि वह खाने के लिए बहुत अच्छी चीज बना देगा। आपको भी खाने के लिए दूंगा।

बुढ़िया ने चूल्हा सुलगा दिया। मुसाफिर ने पत्थर को धोकर साफ किया और पानी की पतीली में डालकर चूल्हे पर चढ़ा दिया। पानी उबलने लगा और वह चम्मच से उस पानी को चलाने लगा। बुढ़िया बड़ी उत्सुकता से इस जादू के खेल को देख रही थी।

थोड़ी देर बाद मुसाफिर ने उस पानी में से जरा सा चखा और बुढ़िया से बोला, "माँ बहुत ही अच्छा बन रहा है, जरा गाढ़ा कम है। यदि घर में गाजर या आलू पड़े हों तो दे दो, और अधिक स्वाद हो जाएगा।" "शायद एक दो आलू और गाजर पड़ी होंगी हंडिया में, अभी लाए देती हूँ।" यह कह बुढ़िया ने दो-तीन आलू और कुछ गाजर लाकर उसे दे दिए। उसने उन्हें काटकर उबलते पानी में डाल दिया और फिर पतीली में चम्मच से घुमाने लगा।

कुछ देर पश्चात उसने उसमें से एक चम्मच पानी चखा और बुढ़िया से कहा- "माँ जी, खाना तो बहुत ही अच्छा बन गया है। यदि एक-दो मुट्ठी चावल इसमें डाल दिए जाएँ तो यह ऐसा स्वादिष्ट बन जाए कि आपने पहले कभी ऐसी चीज नहीं खाई होगी। यों अब भी इसमें कुछ कम स्वाद नहीं है।"

बढ़िया के मुँह में पानी भर आया और भोजन के स्वाद के लिए उसने घड़े में से दो तीन मुट्ठी चावल भी लाकर उसको दे दिए। मुसाफिर ने वे चालव उस उबलते हुए पानी में डाल दिए।

मुसाफिर को जब यह विश्वास हो गया कि अब सब कुछ पककर तैयार हो गया है, उसे फिर एक चम्मच उसमें से चखा और बुढ़िया से बोला, "माँ! ब्स अब देखना इसका स्वाद। खाने के लिए बर्तन ले आओ।" बुढ़िया ज्यों ही बर्तन लेने चली तो मुसाफिर ने फिर चोट की- "माँ! थोड़ा नमक भी लेती आना, शायद कम पड़े।"

बुढ़िया कंजूस तो थी किन्तु जीभ के स्वाद के कारण उसने नमक भी ला दिया। उसने उसे भी पतीली में डाल दिया। लगभग पांच मिनट बाद उसने पतीली को चूल्हे से उतारा और एक थाली में आधी खिचड़ी अपने लिए और दूसरी में आधी बुढ़िया के लिए परोस दी।फिर उसने पतीली से उस पत्थर को निकाला और पानी से धोकर अपने थैले में रख लिया।

दोनों ने डटकर खिचड़ी खाई। बुढ़िया ने दिल खोलकर भोज और पत्थर की तारीफ की। पेट भर खाना खाकर मुसाफिर ने चैन की नींद ली। सवेरे जब वह चलने लगा तो बुढ़िया ने कहा- "बेटा, तुम तो जादू जानते ही हो। मैं बड़ी गरीब हूँ। यदि यह पत्थर तुम मुझे देते जाओ तो मेरे बुढ़ापे के दिन कट जाएंगे।"

उस मुसाफिर ने बिना हिचक के वह पत्थर बुढ़िया को दिया और अपनी राह ली।